जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

9 जुलाई 2021

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में "रिइमेजिनिंग साउथ एशिया: आइडियाज, डिबेट्स एंड रिएलिटीज़" पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन

एमएमएजे अन्तर्राष्ट्रीय अध्धयन अकादमी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने 8 जुलाई 2021 को दक्षिण एशिया व्याख्यान श्रृंखला के क्रम में "रिइमेजिनिंग साउथ एशिया: आइडियाज, डिबेट्स एंड रिएलिटीज़" विषय पर एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया। प्रो. डी. सुबा चंद्रन, डीन, स्कूल ऑफ कॉन्फ्लिक्ट एंड सिक्योरिटी स्टडीज, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बेंगलुरु ने व्याख्यान दिया।

प्रो. अजय दर्शन बेहरा, कार्यवाहक निदेशक, एमएमएजे-एआईएस ने वक्ता और प्रतिभागियों का स्वागत किया। अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में उन्होंने व्याख्यान के विषय का परिचय दिया और रेखांकित किया कि कैसे एक क्षेत्र बनाना और हटाना राजनीति का एक कार्य है और उस विशेष क्षेत्र के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की गतिशीलता है। दक्षिण एशिया का विचार एक अवधारणा के रूप में 1940 के दशक में ऐतिहासिक परिपेक्ष्य की ओर संकेत करता है जिसने इस क्षेत्र में अमेरिकी स्कोलरशिप्स की अभिरुचि में वृद्धि की है।

प्रो. चंद्रन ने अपनी प्रस्तुति यह बताते हुए शुरू की कि 1990 और 2000 के दशक में दक्षिण एशिया के क्षेत्र या अवधारणा की रिइमेजिनिंग करने के विचार पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। उन्होंने कहा कि दक्षिण एशिया के विचार की रिइमेजिनिंग करते समय आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक से लेकर कई विचारों पर चर्चा हुई हैं। पूर्व के विचारों और वाद-विवादों पर बहस करने के बजाय, प्रो. चंद्रन ने अपने व्याख्यान को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया, एक समस्यात्मक प्रश्नों से संबंधित है और दूसरा दक्षिण एशिया की फिर से कल्पना करने की संभावनाओं पर चर्चा करता है।

दक्षिण एशिया की रिइमेजिनिंग पर की गई चर्चा को समझने के लिए उन्होंने पाँच व्यापक परिकल्पनाएँ सामने रखीं। यह परिकल्पनाएँ थीं, दक्षिण एशिया एकमात्र ऐसा क्षेत्र नहीं है जो खुद को फिर से परिभाषित करने की कोशिश कर रहा है। अन्य क्षेत्र भी हैं, जो या तो प्रारंभिक पुन: कल्पना की सफलता के बाद रिइमेजिनिंग की श्रेणी में हैं और इसे फिर से करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे क्षेत्र भी हैं जो प्रारंभिक प्रयास में सफल नहीं हुए हैं और इस प्रकार फिर से प्रयास कर रहे हैं। दूसरी परिकल्पना दक्षिण एशिया के क्षेत्र की रिइमेजिनिंग में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में भूगोल के प्रश्न से संबंधित है। तीसरा "सपने देखने वालों" के बीच असंगति के बारे में था-वे जो एक क्षेत्र की कल्पना करते हैं और "कर्ता"-जो नीति कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं। चौथी परिकल्पना एक क्षेत्र की रिइमेजिनिंग में राज्य की केंद्रीयता के बारे में और यह केंद्रीयता कैसे कल्पना में बाधा डालती है इस संबंध में थी। पांचवीं और आखिरी परिकल्पना इस मुद्दे पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे राज्य अन्यथा कल्पना से खुद को अलग कर लेते हैं और राज्यों और नागरिक समाजों के बीच वियोग के कारण रिइमेजिनिंग से संबंधित कई कथाएँ सामने आती हैं।

उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि किसी क्षेत्र का क्या आकार है या क्या आकार दिया गया है और ऐतिहासिक रूप से क्षेत्रों का निर्माण कैसे किया गया है। क्या राजनीतिक और आर्थिक संस्थाएं रिइमेजिनिंग के विचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, या यहां तक कि एक संस्था के रूप में सेना भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। और अंत में, कैसे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था क्षेत्रों की रिइमेजिनिंग के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बन जाती है। दक्षिण एशिया की कल्पना के संबंध में उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि अवधारणा क्षेत्र के बाहर से उभरी थी, लेकिन आगा खान और केएम पणिक्कर के ऐतिहासिक संदर्भ भी हैं जो इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि पहले भी दक्षिण एशिया की कल्पना करने का इतिहास है। इसे पश्चिमी कल्पना के माध्यम से लेबल किया गया था।

प्रो. चंद्रन ने राज्य की केंद्रीयता के संदर्भ में रिइमेजिनिंग करने की समस्याओं की ओर भी इशारा किया, जो या तो आंतरिक रूप से देखने या अतिरिक्त क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को देखकर प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से बाधित कर रही थी। छोटे राज्यों के भय में भारत का सबसे बड़ा राज्य होने की समस्या भी दक्षिण एशिया की रिइमेजिनिंग करने की समस्या का एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। संभावनाओं के संदर्भ में, उन्होंने कल्पना की कि दक्षिणी एशिया के विचार, इसके सुरक्षा अर्थों से दूर, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कारकों को ध्यान में रखते हुए रिइमेजिनिंग करने की आवश्यकता है।

व्याख्यान में पूरे भारत से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने कई सवाल किए। प्रो. बेहरा ने अपने व्यावहारिक व्याख्यान के लिए वक्ता और प्रतिभागियों को उनकी उत्साही भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया